16 बताओ मैं कौन हूँ

मैं इस धरती पर उत्पन्न नहीं हुई, बल्कि पैदा की गई हूँ। मैंने सबकी सेवा करने का व्रत लिया है, इसलिए मैं किसी के भी काम को मना नहीं करती। कोइ भी काम हो, मैं तुरंत करने को तैयार रहती हूँ।

मैं अंधेरे में उजाला करती हूँ, पर मोमबत्ती नहीं हूँ। गर्मी में ठंडक पहुँचाती हूँ पर हवा नहीं हूँ। सर्दियों में गर्मी देती हूँ, पर आग नहीं हूँ। पंखा करने, संदेश पहुँचाने, सफाई करने, छाछ बिलौने जैसे कई कार्य करती हूँ, पर किसी की नौकरानी नहीं हूँ। काम से मैं कभी नहीं थकती, दिन–रात काम करती रहती हूँ। अब तो आप समझ ही गए होंगे कि मैं कौन हूँ ? यदि नहीं जानते तो लो और बताती हूँ।

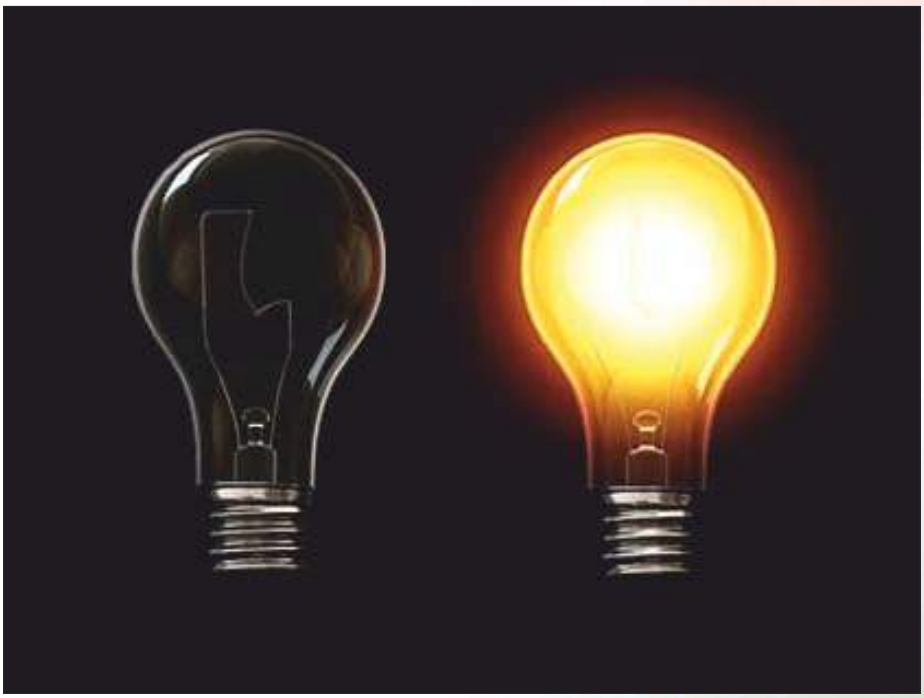

मैं चक्की चलाती, कपड़े धोती, जमीन से पानी खींचती, गाने सुनाती,

दूरदर्शन दिखाती, अखबार छापती, ऐसा कोई काम नहीं जो मैं नहीं करती हूँ। सभी लोग मेरा आदर करते हैं। जो लोग मेरी परवाह नहीं करते, उन्हें मैं सबक भी सिखाती हूँ।

एक बार की बात है, एक मैदान में समारोह का आयोजन हो रहा था। चारों तरफ रोशनी थी। लोग आ–जा रहे थे। बैंड बज रहा था। पंडाल में लोग खाना खा रहे थे। पंडाल की सारी शोभा का कार्य मुझे ही सौंपा गया था। मैं भी चारों तरफ दौड़–दौड़ कर कार्य कर रही थी। कुछ जगह मेरा दुरुपयोग हो रहा था। यह देख कर मुझे क्रोध आ गया और मैं एकदम वहाँ से चली गई। मेरे जाते ही सब तरफ अफरा–तफरी मच गई। लोग इधर–उधर दौड़ने लगे, चिल्लाने लगे। कुछ लोग मुझे ढूँढने लगे। जब वे बहुत परेशान हो गए तो मुझसे उनका दुःख नहीं देखा गया और मैं वापस आ गई। मेरे वापस आते ही खुशी की लहर दौड़ गई। लोगों ने मेरा महत्त्व समझ लिया था।

मुझे सुस्ती पसंद नहीं है। मेरी चाल बहुत तेज है। मैं धातु के तारों में प्रवाहित होकर पल भर में हजारों किलोमीटर तक पहुँच जाती हूँ। मेरा प्रवाह रबर, लकड़ी या स्विच ही रोक सकता है। अन्यथा मैं हवा से बातें करती हूँ।

मैं लोगों की पक्की मित्र हूँ फिर भी वे मुझे छू नहीं सकते।

यदि लोग मेरा दुरुपयोग रोकेंगे तो लम्बे समय तक मैं उनकी सेवा करती रहूँगी। मुझसे जरूरत के अनुसार ही काम लेंगे तो सभी लाभ में रहेंगे।

अब तो जान ही गए होंगे कि मैं बिजली हूँ।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

उत्पन्न	–	पैदा होना
समारोह	–	जलसा, उत्सव
शोभा	–	सुंदरता
प्रवाहित	–	बहना
सदुपयोग	–	उचित उपयोग
दुरुपयोग	–	अनुचित उपयोग
अफरा–तफरी	–	गड़बड़ होना
खुशी की लहर दौड़ना	–	सबका प्रसन्न होना

उच्चारण के लिए

उत्पन्न, बल्कि, चक्की, पंडाल, चिल्लाने, महत्त्व, अन्यथा

सोचे और बताएँ

1. समारोह का आयोजन कहाँ हो रहा था ?
2. पंडाल में लोग क्या कर रहे थे ?
3. अंधेरे में उजाला कौन करती है ?

लिखें

1. सही कथन पर सही तथा गलत कथन पर गलत का चिह्न लगाएँ–

   (क) मैं अंधेरे में उजाला करती हूँ। ( )

   (ख) दिन–रात काम करने से मैं थक जाती हूँ। ( )

   (ग) मैं धातुओं के तारों में प्रवाहित नहीं होती। ( )

   (घ) मेरा प्रवाह रबड़ रोक सकता है। ( )

   (ङ) मेरी चाल बहुत धीमी है। ( )

2. बिजली क्या काम करती है ?
3. बिजली किसमें प्रवाहित होती है ?
4. बिजली के दुरुपयोग से क्या आशय है ?
5. यदि बिजली न हो तो क्या होगा ?

भाषा की बात

- पाठ में 'दुरुपयोग' और 'सदुपयोग' शब्द आएँ हैं। इन दोनों शब्दों में मूलशब्द 'उपयोग' है तथा 'दुर्' / 'सद्' पूर्व में जुड़कर उपर्युक्त शब्द बने हैं। आप भी निम्नलिखित शब्दों को जोड़कर नया शब्द बनाएँ–

  दुर् + उपयोग – दुरुपयोग सद् + उपयोग – सदुपयोग

  दुर् + आचरण – ..... सद् + आचरण – .....

  दुर् + आचार – ..... सद् + आचार – .....

- 'दुरुपयोग' शब्द 'सदुपयोग' शब्द का विपरीतार्थी भी है। इसी प्रकार 'दुर्' और 'सद्' से बनने वाले पाँच विपरीतार्थी शब्द लिखें

  जैसे – दुर्गुण – सद्गुण

- बिजली के दुरुपयोग एवं सदुपयोग के बारे में अपनों से

बड़ों से बात कर बिजली के उपयोग पर पाँच वाक्य लिखें।

यह भी करें

- आप के घर तथा पड़ोस में बिजली से किए जाने वाले कार्यों को देखें।
- बिजली से चलने वाले उपकरणों के नामों की एक सूची बनाएँ

कुबेर भी यदि आय से अधिक व्यय करे तो निर्धन हो जाता है।

—चाणक्य

चित्रकथा

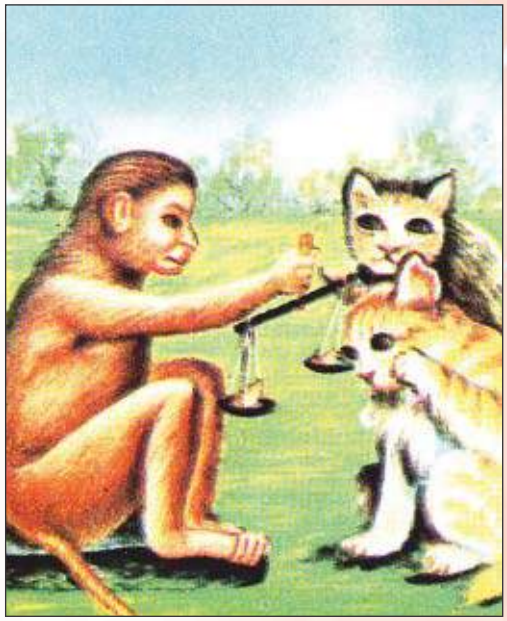

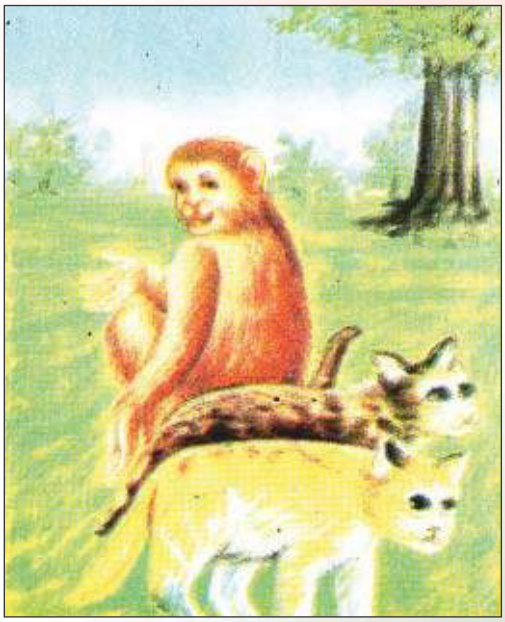

निर्देश– शिक्षक/शिक्षिका चित्रों की सहायता से कहानी बनवाएं व उस पर चर्चा करें।